॥ ओ३म् ॥

# महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का भाषा एवं शैलीगत विश्लेषण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की
पी-एच०डी० ( हिन्दी ) उपाधि के लिए
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संक्षेपिका




निर्देशक
डॉ० सन्तराम वैश्य
प्रोफेसर डीन मानविकी संकाय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शोधकर्त्री
रीना रानी
गोहाना ( सोनीपत )



हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार ( उत्तराखण्ड )
2007 ई०

॥ ओ३म् ॥

# महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का भाषा एवं शैलीगत विश्लेषण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की
पी-एच०डी० ( हिन्दी ) उपाधि के लिए
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संक्षेपिका




20-4-07
निर्देशक
डॉ० सन्तराम वैश्य
प्रोफेसर डीन मानविकी संकाय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

रीना रानी
शोधकर्त्री
रीना रानी
गोहाना ( सोनीपत )



हिन्दी विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार ( उत्तराखण्ड )
2007 ई०

# संक्षेपिका

## महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का भाषा एवं शैलीगत विश्लेषण

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना करके न केवल एक धार्मिक राष्ट्रीय एवं सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात किया, अपितु इसके प्रचार के लिये हिन्दी में ग्रन्थ लिखकर खड़ी बोली हिन्दी गद्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भाग लिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्भवतः प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी के महत्व को समझा और उसका अपने उपदेशों तथा ग्रन्थों द्वारा व्यापक रूप से प्रचार किया। देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करते हुए उन्होंने यह अनुभव किया कि हिन्दी सर्वत्र समझी जाने वाली भाषा है और अपने विचारों के प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। अतएव उन्होंने हिन्दी का विशेष प्रचार किया, उसे 'आर्यभाषा' का नाम दिया, अपने ग्रन्थों को हिन्दी में लिखा, सभी लोगों को हिन्दी सीखने के लिये प्रेरित किया और यह भी घोषणा की कि हिन्दी भाषा आर्यभाषा है और कन्याकुमारी से पेशावर तक बोली और व्यवहार की जाने वाली समस्त देश की राष्ट्रभाषा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिये हिन्दी में आठ वर्ष की अल्पावधि में ही आश्चर्यजनक विशाल साहित्य का सृजन किया। उनके इस साहित्य से हिन्दी गद्य में निखार आया, उसके [illegible] विस्तार हुआ, गम्भीर विषयों पर तर्क और विवाद करने की तथा चिन्तन की क्षमता विकसित हुई, व्यंग्य और विनोद की शैली का प्रचलन हुआ, भाषा की ओजस्विता और प्रखरता में विलक्षण वृद्धि हुई। कथा–कहानियों [illegible]

# संक्षेपिका

## महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का भाषा एवं शैलीगत विश्लेषण

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में आर्य समाज जैसी क्रान्तिकारी संस्था की स्थापना करके न केवल एक धार्मिक राष्ट्रीय एवं सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात किया, अपितु इसके प्रचार के लिये हिन्दी में ग्रन्थ लिखकर खड़ी बोली हिन्दी गद्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भाग लिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्भवतः प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी के महत्व को समझा और उसका अपने उपदेशों तथा ग्रन्थों द्वारा व्यापक रूप से प्रचार किया। देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करते हुए उन्होंने यह अनुभव किया कि हिन्दी सर्वत्र समझी जाने वाली भाषा है और अपने विचारों के प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। अतएव उन्होंने हिन्दी का विशेष प्रचार किया, उसे 'आर्यभाषा' का नाम दिया, अपने ग्रन्थों को हिन्दी में लिखा, सभी लोगों को हिन्दी सीखने के लिये प्रेरित किया और यह भी घोषणा की कि हिन्दी भाषा आर्यभाषा है और कन्याकुमारी से पेशावर तक बोली और व्यवहार की जाने वाली समस्त देश की राष्ट्रभाषा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिये हिन्दी में आठ वर्ष की अल्पावधि में ही आश्चर्यजनक विशाल साहित्य का सृजन किया। उनके इस साहित्य से हिन्दी गद्य में निखार आया, उसके क्षेत्र का विस्तार हुआ, गम्भीर विषयों पर तर्क और विवाद करने की तथा लिखने की क्षमता विकसित हुई, व्यंग्य और विनोद की शैली का प्रचलन हुआ, भाषा की ओजस्विता और प्रखरता में विलक्षण वृद्धि हुई। कथा–कहानियों तक सीमित

हिन्दी साहित्य में प्रथम बार विषयों का गम्भीर विवेचन और दार्शनिक प्रश्नों की सूक्ष्म मीमांसा की जाने लगी। जो ऐसा अभी तक हिन्दी गद्य में नहीं हुआ था, इस दृष्टि से हिन्दी गद्य को स्वामी दयानन्द की देन अविस्मरणीय है।

यह सब कार्य महर्षि ने उस समय किया जब सर्वत्र सरकारी कार्यालयों, न्यायालयों और शिक्षणालयों में उर्दू भाषा का प्रचार था। उस समय उर्दू भाषा के नेता सर सैयद अहमद खां थे, उनका तथा उनके साथियों का प्रयास यह था कि हिन्दी को किसी प्रकार भी पनपने न दिया जाये। हिन्दी की अवस्था शोचनीय थी। उस पर चारों ओर से कुठाराघात किये जा रहे थे। हिन्दी को अदालतों और सरकारी कार्यालयों से वंचित किया जा चुका था। हिन्दी को शिक्षा के क्षेत्र से भी बाहर करने के प्रयास किये जा रहे थे। सर सैयद अहमद खाँ जैसे नेता हिन्दी को गंवारी कहकर बदनाम कर रहे थे। उनके प्रभाव में आकर भारत सरकार ने हिन्दी के विषय में एक सूचना निकाली थी जिसमें कहा गया था–

''ऐसी भाषा का जानना सब विद्यार्थियों के लिये आवश्यक ठहराना जो मुल्क की सरकारी और दफ्तरी जबान नहीं है, हमारी राय में ठीक नहीं। इसके सिवाय मुसलमान विद्यार्थी जिनकी संख्या देहली कॉलेज में बढी है, इसे अच्छी नजर से नहीं देखेंगे।''

उन दिनों एक फ्रांसीसी विद्वान् गार्सा–द–तासी उर्दू के पक्ष का कट्टर समर्थन कर रहे थे। वे इस्लाम को सामी मत होने से ईसायत जैसा और मूर्तिपूजक हिन्दूओं के धर्म तथा हिन्दी भाषा के कट्टर विरोधी थे। उस समय शासकों का यह विश्वास था कि शीघ्र ही हिन्दी उर्दू के आगे नतमस्तक हो जायेगी और शिक्षणालयों में सर्वत्र उर्दू का साम्राज्य स्थापित

हो जायेगा। न केवल मुसलमान अपितु ब्रिटिश शासक भी उर्दू के प्रचार का प्रबल प्रयास कर रहे थे। काशी के राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' जैसे हिन्दू भी अंग्रेज अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिये, जनता के लिये सुबोध भाषा के नाम पर अरबी फारसी गर्भित शुद्ध उर्दू का हिन्दी के नाम पर प्रचार कर रहे थे। हिन्दी के लिये ऐसे संकटपूर्ण समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी की नैय्या पार लगायी।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का भाषा एवं शैली गत विश्लेषण" में महर्षि दयानन्द सरस्वती के हिन्दी गद्य का जहाँ भाषा एवं शैलीगत विश्लेषण करने का प्रयास किया गया वहीं उनके हिन्दी विषयक कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उन्हें हिन्दी गद्य के इतिहास में उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के पांचों अध्यायों में मैंने सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती के हिन्दी गद्य विषयक ग्रन्थों का परिचय कराया है। यहाँ यह स्मरणीय है कि महर्षि दयानन्द ने संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में लेखन कार्य किया है। उन्होंने अपना वेदभाष्य (जो ऋग्वेद पर 7वें मण्डल के 61 वे सूक्त के दूसरे मंत्र तक ही अपूर्ण मिलता है जिसके अपूर्ण रहने के कारण उनकी असामायिक मृत्यु है तथा यजुर्वेद भाष्य 40वें अध्याय पर्यन्त पूर्ण मिलता है) संस्कृत भाषा में ही लिखा है, उनका हिन्दी अनुवाद पण्डितों से कराया है, जबकि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका दोनों भाषाओं में लिखी है।

दूसरे अध्याय में महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी गद्य भाषा का स्वरूप विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में उनकी भाषा के स्वरूप का अध्ययन करते मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि उनकी भाषा पर गुजराती, ब्रज, संस्कृत, हरियाणवी एवं राजस्थानी आदि भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव था।

गुजराती तो उनकी मातृभाषा थी जिसके कारण उनके गद्य में गुजराती ढंग की वाक्य रचना उपलब्ध होती है। उन्होंने अपने गद्य साहित्य में ऊंदर, कुम्भार, ससा आदि शब्दों एवं पोपाबाई का न्याय आदि का उपयोग किया है। मथुरा प्रवास काल में वे ब्रज भाषा के सम्पर्क में आये थे। जिसके कारण ब्रज भाषा के अनेक शब्द उनकी भाषा में समाहित हो गये। इसलिये वे चाहैं, रहैं, होवैं, भया आदि शब्दों को अपने हिन्दी गद्य में स्थान देते हैं।

बद्दल, सतत्, मट्टी, मच्छी, धूड, जिमाना इत्यादि शब्दों के मिश्रण के कारण उनके गद्य पर हरियाणवी, राजस्थानी एवं ग्रामीण भाषाओं पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तत्सम शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ पुनरुक्त, निरुद्यम, अनध्याय, परिच्छिन, अव्याहतगति, ऐक्यमत आदि शब्द देखे जा सकते हैं।

महर्षि दयानन्द ने उर्दू, अरबी–फारसी आदि भाषाओं के अनेक शब्दों को ग्रहण कर हिन्दी भाषा के शब्दकोश में व्यापक वृद्धि की। उसकी भाषा में बड़ा ओज, सरलता, प्रवाह और रोचकता पाई जाती है। उनकी भाषा अत्यन्त सुबोध स्पष्ट एवं प्रवाह गुण युक्त है।

महर्षि दयानन्द की भाषा पर संस्कृत का लिंग विषयक प्रभाव है। संस्कृत में जो शब्द पुलिंग हैं वे उनका प्रयोग हिन्दी में भी उन्हीं लिंग में करते हैं। इसी प्रकार देवता जैसे शब्द जो संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं, उन्हें हिन्दी में स्त्रीलिंग में ही रखा है। उन्होंने तत्भव के स्थान पर तत्सम शब्दों को अधिक महत्व दिया, क्योंकि संस्कृत के तत्सम शब्दों की वर्तनी सर्वथा

सुनिश्चित है।

तृतीय अध्याय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के हिन्दी गद्य भाषा के सौन्दर्य विधायक तत्वों का उल्लेख किया गया है। सौन्दर्य विधायक तत्वों के अन्तर्गत व्यंग्योक्तियाँ, सूक्तियाँ लोकाक्तियाँ, मुहावरे, अलंकार एवं अन्तर्कथाओं को गृहीत किया गया है। महर्षि जी की भाषा में मुहावरों और कहावतों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। इससे उनकी भाषा का ओज, अभिव्यक्ति का सामर्थ्य और प्रभाव बढ़ गया है। उन्होंने धुर्रे, उडाना, दाल न गलना आदि मुहावरों का कई प्रयोग किया है। 'आंख का अन्धा और गांठ का पूरा' का मुहावरा उन्हें विशेष रूप से प्रिय था। उन्होंने कई लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। जैसे– उलटा चोर कोतवाल को डन्डे, कहीं की ईंट कहीं का रोडा भानुमति ने कुनबा जोड़ा''।

जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क होने के कारण उन्होंने अट्टसट, सैलसपट्टा, गापड़चौथ, भेंटभट्टका, टिक्की जमाई आदि ठेठ ग्रामीण मुहावरों का भी प्रयोग किया है।

उन्होंने अपने ग्रन्थों में अनेक सूक्तियों का प्रयोग किया है। विषय को ग्राहक एवं रोचक बनाने हेतु अनेक अन्तर्कथाएँ लिखी हैं।

चतुर्थ अध्याय में महर्षि दयानन्द के हिन्दी गद्य का शैली गत विश्लेषण किया गया है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में विविध प्रकार के विषयों का विवेचन किया है और इनके लिये विषयों के अनुरूप अनेक प्रकार की शैलियों का उपयोग किया है। महर्षि जी ने दार्शनिक प्रश्नों के विवेचन में गम्भीर तर्कपूर्ण शैली का उपयोग किया है। इसमें सुबोध भाषा में पाठक को अपने मन्तव्य के युक्ति युक्त होने का विश्वास तर्कपूर्ण शैली में कराया गया है। कुरीतियों का

खण्डन करते हुए महर्षि जी ने व्यंग्यात्मक शैली का उपयोग किया है। इसका प्रयोग सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम समुल्लासों में बड़ी सफलतापूर्वक किया गया है।

पाखण्डों के खण्डन में उन्होंने अपनी विनोदवृत्ति का अच्छा प्रदर्शन किया है। इसलिये उन्होंने हरिद्वार में हर की पैडी को हाड पैडी और जन्मपत्र को शोक पत्र कहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समस्त ग्रन्थों में प्रश्नोत्तर शैली का सुतराम् उपयोग किया है। यह शैली उन्हें अतीव प्रिय थी। वे शास्त्रार्थ भी इस शैली में किया करते थे।

उत्तम लेखकों और वक्ताओं की भांति अपने मन्तव्य को पुष्ट करने हेतु उन्होंने सर्वत्र सुन्दर उदाहरण एवं दृष्टान्त दिये हैं। शेख चिल्ली की कथा, लाल बुझक्कड की कहानी, अन्धेर नगरी के गर्वगण्ड राजा की कथा आदि दृष्टान्तों का बडे प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया गया है। इनके अतिरिक्त आक्रोशात्मक, संवादात्मक शैलियों का भी प्रयोग ऋषि दयानन्द ने अपने हिन्दी गद्य में सफलता से किया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी गद्य को महर्षि दयानन्द की देन को विवेचित किया गया है। इसके अन्तर्गत मैं इस निष्कर्ष पर पहुॅची हूॅ कि महर्षि दयानन्द ने हिन्दी गद्य को जहॉ संस्कृत किया वहीं इसे व्यापक बनाया।

महर्षि दयानन्द के प्रभाव से हिन्दी गद्य रीतिकालीन श्रृंगारिता से मुक्त हो गया। उसे एक नयी दिशा मिली। पहले हिन्दी गद्य कथा–कहानियों तक ही सीमित था। किन्तु महर्षि दयानन्द ने हिन्दी गद्य में सत्यार्थ प्रकाश जैसा अनुपम ग्रन्थ लिखकर अन्य विषयों के भी बन्द द्वार हिन्दी गद्य के

लिये उदघाटित कर दिये। इतिहास, दर्शन, वैद्यक, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों के भी हिन्दी के ग्रन्थ सृजित होने लगे। हिन्दी गद्य का परिष्कार होने लगा।

महर्षि दयानन्द एक महान् समाज सुधारक थे। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक, कुरीतियों पर कुठाराघात किया। उनके उपदेशों, शास्त्रार्थों एवं हिन्दी ग्रन्थों के प्रचार प्रसार से सुधारवादी भावना का प्रचार होने लगा। वैचारिक स्तर ऊँचा होने लगा, शास्त्रों का मंथन होने लगा। पाखण्ड अंधविश्वास रूपी तम सत्य रूपी सूर्य से मुंह छिपाने लगा।

महर्षि दयानन्द ने वेदों का हिन्दी भाष्य करके वैदिक एवं संस्कृत ग्रन्थों की हिन्दी में सुलभता होने का शुभारम्भ कर दिया, उनके बाद में उनके अनुयायी आर्य विद्वानों ने समस्त वैदिक एवं संस्कृत ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद करके उन्हें जन साधारण के लिये उपादेय बनाकर महान् कार्य किया।

महर्षि दयानन्द से पूर्व खडी बोली मात्र उत्तरी भारत तक ही सीमित थी। महर्षि दयानन्द ने उसका अपने उपदेशों, शास्त्रार्थों प्रयोग करके एवं साहित्य सृजन से क्षेत्र विस्तार किया। हिन्दी सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु मॉरीशस फिजी, गुयाना, ट्रिनिडाड आदि देशों तक फैल गयी।

महर्षि दयानन्द की दिव्य दृष्टि ने हिन्दी के महत्व को बहुत समय पूर्व ही देख लिया था। उन्होंने अनुभव किया था कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा के गौरवमय पद को प्राप्त कर सकती है। अतः उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये अभूतपूर्व कार्य किया। अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा सीखकर अपने व्याख्यान हिन्दी में देने प्रारम्भ किये। जून

1874 में सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी में बोलकर लिखना शुरु किया। जब 1875 ई0 में मुम्बई में पहली आर्य समाज की स्थापना की तो आर्य समाज के नियमों में उन्होंने प्रत्येक आर्य समाजी के लिये हिन्दी पढ़ना–पढ़ना आवश्यक कर दिया। साथ ही यह भी निर्णय लिया कि आर्य समाज का समस्त साहित्य हिन्दी में प्रकाशित होना चाहिए और हिन्दी ही इसके प्रचार का प्रधान माध्यम बननी चाहिए।

यदि महर्षि हिन्दी प्रचार के लिये इतना प्रबल प्रयास न करते और आर्य समाज इसके विस्तार का उद्योग न करता तो हिन्दी आज इस स्थिति में न होती। महर्षि दयानन्द का आर्य समाज इस प्रकार का पहला आंदोलन है। जिसने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रयास किया। इसलिये यह कहा जाता है कि जिन सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलनों के द्वारा हिन्दी को प्रोत्साहन मिला तथा जिन प्रवृतियों का इस दिशा में योगदान रहा है। उसमें आर्य समाज का स्थान सर्वोपरि हैं। मिश्र बन्धु विनोद तथा डॉ0 रामचद्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस तथ्य को स्पष्टता से स्वीकार किया गया है।

---